भारत चीन संबंध

Pinku Kumar[1]*, Dr. Akhtar Romani[2]

[1] Research Scholar, Dept. of History, M.U., Bodh Gaya

[2] Associate Professor, Department of History, S.N.S College, Jehanabad

सार - प्रस्तुत शोध अध्ययन का शीर्षक श्भारत-चीन सम्बन्ध है जिसका मुख्य उद्देष्य भारत तथा चीन के सम्बन्धों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा यू.पी.ए सरकार के कार्यकाल में भारत तथा चीन की विदेश नीति का अध्ययन करना तथा भारत-चीन सम्बन्धों का दक्षिण एशियाई देशो में श्क्ति की राजनीति का अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन में विश्लेषणात्मक तथा वर्णात्मक शोध प्ररचनाओ का प्रयोग किया गया है सम्पूर्ण शोध कार्य द्वितीयक स्त्रोतों पर आधारित है। शोध अध्ययन के निष्कर्ष में भारत-चीन सम्बन्धों को भविष्य में कैसे सुद्राव दिये गये हैं। इस आधार पर प्रस्तुत अध्ययन युवा जनसंख्या संरचना, श्रमिकों की पर्याप्त आपूर्ति , उच्च स्तरीय सूचना उपयोग , सांस्कृतिक एवं शैक्षिक आदान-प्रदान और उच्च प्रतिस्पर्धा से दोनों देषों के लिये महत्वपूर्ण है।

---------------------------------x---------------------------------

प्रस्तावना

भारत और चीन दो एशियाई शक्तिशाली देश हैं जो कुल विश्व आबादी (भारत गणराज्य की कुल आबादी-1,337,364,9601 और चीन लोक गणराज्य की कुल आबादी-1,386,301,3902) का 35 प्रतिशत और दुनिया के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 13 प्रतिशत हिस्सा है। भारत-चीन के आपस में सांस्कृतिक , वाणिज्यिक, और वैचारिक सम्बन्धों का इतिहास लगभग दो हजार वर्ष पुराना है। वर्तमान पदिदृश्य में भारत तथा चीन दुनिया की उभरती हुई शक्तियाँ हैं और वे 21वीं सदी को एशियाई शताब्दी के रूप में देखते हैं। प्राचीन काल में चीन और भारत को आध्यात्मिक और धार्मिक गतिविधियों के केन्द्र के रूप में जाना जाता था।

चीन जब आधुनिक रूप में उदित हुआ तो उसने ऊपरी तौर पर हर प्रकार से भारत तथा भारत की जनता के प्रति सद्भावना एवं मैत्री की भावना प्रदर्शित की। दोनों देशों के महान नेता पं जवाहरलाल नेहरू और चाऊ-एन-लाई ने एक-दूसरे के देश की यात्राऐं कर , एक-दूसरे की सार्वभौमिक स्वतन्त्रता, सत्ता और सीमाओं को स्वीकार कर हर स्तर पर सम्बन्धों को सुदृढ बनाने की बात कहते रहे। सन् 1953 में जब चाऊ-एन-लाई भारत आए तब नेहरू और चाऊ ने पंचशील के उन सिद्धान्तों को पुनर्जन्म दिया , जो महात्मा बुद्ध के काल से भारत और पूरे एशिया के आधारभूत आदर्श रहे हैं। बड़े जोर-शोर से 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' के नारे भी लगाए जाते रहे। भारत सच्चे मन से इन नारों और पंचशील की नीतियों का पालन करता रहा। जबकि चीन का इन सबकी आड़ में और ही निहित स्वार्थ छिपा हुआ था इसी की पूर्ति की दिशा में वह अन्दर-ही-अन्दर सक्रिय रहा और तब तक रहा जब तक की भाई-चारे की पवित्र भावना से प्रेरित होकर भारत ने अपना ही एक हिस्सा तिब्बत, चीन को सौंप दिया।

भारत तथा चीन एक लम्बी अवधि से एक-दूसरे को सामरिक, आर्थिक एवं कूटनीतिक दृष्टि से पीछे करने (प्रतियोगिता के दृष्टिकोण से) के लिए प्रयत्न करते आ रहे हैं तथा एशिया में अपने वर्चस्व को लेकर एक दूसरे के प्रतिद्वन्दी भी हैं। वर्तमान में राजनीति में चल रही शक्ति की राजनीति के युग में भारत-चीन सम्बन्धों की नई पहल का महत्व दोनों देशो के हितों के लिए ही नहीय अपितु तृतीय विश्वो के विकासशील देशों के हितों के लिये भी आवष्यक है। 1954 में भारत के प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू तथा चीनीं प्रधानमंत्री चाऊ-एन-लाई के द्वारा सह-अस्तित्व के लिये प्रतिपादित पंचषील सिद्धान्त दोनों देशों के बीच सहयोग एवं सम्मान हेतु स्थापित किया गया है। भारतीय प्रधानमंत्री वाजपेयी की चीन यात्रा के समय चीनी प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ के साथ हुई

www.ignited.in

बातचीत के बाद सीमा रास्ते से व्यापार बा घोषणा पत्र जारी किया गया जिससे दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग को गति मिलने पर आपसी विश्वाेस का एक नया परिवेश बना। यू.पी.ए. सरकार के कार्यकाल के दौरान भारत-चीन सम्बन्धों में अनेक परिवर्तन देखने को मिले एक तरफ सीमा समस्या को दरकिनार करके दोनों देशों ने व्यापार सहमति एम ओ यू और समझौतों पर हस्ताक्षर किए। वास्तविक यह है कि दोनों दे देशों का आर्थिक व व्यापारिक भविष्य राजनीतिक व राजनयिक वातावरण के द्वारा सही अर्थों में तय हुआ। जिससे भारत-चीन सम्बन्ध एक नये युग में प्रवेश कर रहे हैं, जो कि व्यापारिक व आर्थिक दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सामयिक पहल है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

मश्रा (2010), ने अपने शोध पत्र 'चारों तरफ से चुनौती बनता चीन' में चीन द्वारा हो रही पड़ोसी देशों में घेराबंदी को भारत के लिये खतरा बताया है। इनका मानना है कि चीन की यह घेरा बन्दी अमेरिका को कोई नकेल लगा सके या ना लगा सके, लेकिन भारत के लिये यह अत्यन्त घातक सिद्ध होगी। अपने शोध-पत्र के अन्तर्गत लेखक यह मानते आये हैं कि भारत को निष्चित रूप से चीन से सबसे बड़ा खतरा है। मिश्रा जी ने चीन की इस कूटनीतिक प्रक्रिया के आधार पर चीन व्यवहार को 'स्वीट शुगर' की संज्ञा दी है। साथ ही साथ इन्होंने इस शोध में मैकमोहन लाइन , अरूणाचल प्रदेश , अक्साई चिन , तिब्बत में सामरिक हथियारों की तैनाती , ब्रहमपुत्र को मोड़ने की योजना , हिमाचल प्रदेश में बढता चीनी खतरा, माउंट एवरेस्ट में बेस कैम्प व सड़क निर्माण, परमाणु प्रक्षेपास्त्रों की तैनाती, पाक-चीन सैन्य समझौता, नेपाली सेना पर प्रभुत्व, बांग्लादेष के साथ परमाणु कार्यक्रम योजना, म्यांमार के साथ सड़क मार्ग का निर्माण, मुस्लिम 16 देशों के साथ बढती निकटता श्रीलंका के समुद्री अड्डों में सहयोग तथा समुद्री सीमा में बढती चीन की सक्रियता आदि बिन्दुओं पर प्रकाश डाला है तथा इनकी सविस्तार मीमांसा की है।

मुरूगनाथम (2011) रत-चीन सम्बन्धों के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण है कि दोनों देशों (भारत-चीन) के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध शान्ति के लिए अत्यन्त आवष्यक हैं इन्होनें इन रिश्तों को पैटर्न के द्वारा चिन्हित किया है जिसमें उतार-चे क्षेत्रीय विवाद, चीन के राष्ट्रवाद और उसकी सैन्य शक्ति का उदय और भारत के पड़ोसियों के लिये चीनी रणनीतिओं का भारत-चीन सम्बन्धों पर काफी प्रभाव पड़ा है। इस सन्दर्भ में लेखक ने विश्लेषण किया है कि भारत-चीन सम्बन्ध इन मुद्दों के प्रकाश में है भारत-चीन सीमा विवाद , चीनी राष्ट्रवाद, भारत-चीन सम्बन्ध, भारत के पड़ोस में चीन साथ ही साथ उन्होनें यह भी विष्लेषण किया है कि दक्षिण एशियाई क्षेत्र में चीन की नई रणनीतियां जो कि भू-राजनीतिक सन्दर्भ में आवश्यनक रूप से प्रकाश डालने योग्य हैं। अन्त में लेखक ने पाकिस्तान से म्यांमार तक फैले चाप के साथ बीजिंग के प्रभाव में वृद्धि के बारे में बात की है जो कि भारत के पड़ोस में चीनी क्षमताओं का एक महत्वपूर्ण प्रदर्शन गंभीर चिंता का एक कारण हैं। यह भारत और एशिया के लिए महत्वपूर्ण है कि भारत-चीन सम्बन्ध आगे और दीर्घकालिक स्थिरता बनाए रखें।

नरूला (2012) ने अपनी पुस्तक 'प्रमुख राष्ट्रों की विदेश नीति' में चीन की भूमिका का वर्णन किया है। इनका कहना है कि प्रारम्भ से ही चीन की विदेश नीति आक्रमणकारी रही है। इस आक्रमणकारी नीति की वजह से चीन आज भी विश्वह राजनीति में रूचि रखता है। चीन की नेपाल में रूचि का कारण भारत को सुरक्षा की दृष्टि से कमजोर करना है। चीन ने अपना प्रभाव बढ़ाने के लिये अनेक ऐसी गतिविधियां की है जिनके उदाहरण मैकमोहन रेखा, अरूणाचल प्रदेश में चीन अधिकृत भूमि विवाद , सिक्किम विवाद तथा लददाख क्षेत्र का विवाद प्रमुख है ।

उपाध्याय (2013) "चीन: भारतीय परिदृष्य में" लेखक ने अपने इस अध्ययन में सामरिक दृष्टिकोण के आधार पर चीन की भारतीय विदेश नीति का अध्ययन किया है। इनका मत है कि चीनी जिस देश को अपना तगड़ा प्रतिद्वन्दी मानते हैं उसे आंच पर रखे बर्तन की तरह खौलाये रखना पसंद करते हैं हाल ही के वर्षों में भारत के साथ उनके सम्बन्धों के तरीकों से यह उजागर होता है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य चीन की जम्मू कश्मीरर तथा अरूणाचल प्रदेश में नत्थी वीजा की समस्या का अध्ययन करना है। इस अध्ययन के दौरान लेखक निश्कनर्षतः इस मोड़ पर आ पहुँचे हैं कि उन्होंने भारतीय विदेश नीति निर्माताओं को अपना सुझाव दिया है कि ऐसी स्थिति में भारत को चाहिए कि वह सैनिक दृष्टि से अपनी क्षमता को बढ़ाये तथा एशिया में एक नाटो जैसे संगठनों की स्थापना करें। चीन की आये दिन की हरकतों में यह एक बहुत अच्छी रणनीति सिद्ध होगी।

कांग्रेस सरकार के समय में भारत-चीन सम्बन्ध

चीन के प्रति भारत का दृष्टिकोण प्रारम्भ से ही मित्रतापूर्ण रहा है। स्वतन्त्रता संग्राम के दिनों से ही नेहरू जी भारत और चीन की मित्रता पर बल देते रहे हैं। जब

www.ignited.in

चीन में चियांग-काई-शेक की कुओमिन्तांक सरकार का शासन था तब भी भारत-चीन के सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के समाप्त होने पर पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने चियांग-काई-शेक को भारत यात्रा के लिये आमन्त्रित किया था। 1942 में वो भारत यात्रा पर आये थे जिससे भारत में चीन के जापानी साम्राज्यवाद के विरूद्ध संघर्ष के प्रति सहानुभूति की एक लहर फैल गई। 1946 में भारत द्वारा जिस 'एशियन कान्फरेन्स' का दिल्ली में आयोजन किया गया था।

अक्टूबर 1949 ई. में चीन में साम्यवादी शासन का प्रारम्भ हुआ तथा भारत ही पहला देश था जिससे चीन की साम्यवादी क्रान्ति को मान्यता दी। 1949 में जब चीन में कम्युनिस्ट शासन स्थापित हो गया उस दौरान भी पण्डित नेहरू की चीन के प्रति भावना में कोई बदलाव नहीं दिखाई दिया। उन्होंने माओ-त्से-तुंग की सरकार की वैध सत्ता को स्वीकार किया। उस दौरान भारत की कांग्रेस सरकार का भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से विरोध था और स्वतन्त्र भारत की 35 कांग्रेस सरकार ने कम्युनिस्ट विद्रोहियों के दमन के लिये 1948 में शक्ति का भी प्रयोग किया था। इस घटना के बाद भी पं. नेहरू ने इसकी परवाह किये बगैर चीन की नई कम्यूनिस्ट सरकार के साथ वही मैत्री सम्बन्ध कायम रखे। 1950 में नेहरू जी को यह फार्मूला उचित लगा कि चीनी सरकार को संयुक्त राष्ट्र संघ में सदस्यता प्रदान की जाए और अमेरिका उसे ही सम्पूर्ण चीन की वैध सरकार के रूप में स्वीकार करे। उन्होंने चीनी सरकार को संयुक्त राष्ट्र संघ में सदस्यता दिलाने के सम्बन्ध में आन्दोलन किया परन्तु वह सफल नहीं हो सके। 1950 में सेनफ्रान्सिसको में राष्ट्रों के साथ होने वाली जापानी सन्धि में भारत इसलिये शामिल नहीं हुआ क्योंकि चीन को उसमें शामिल नहीं किया गया था। परन्तु बाद मंे जब चीन को स्थायी सदस्यता प्राप्त हुई उस दौरान भारत ने चीन का जोरदार समर्थन किया।

भारत - चीन सम्बन्ध टकराव और तनाव का काल

पंचशील और बांण्डुग सम्मेलन को भारतीय कूटनीति की महान् सफलताऐं माना गया था परन्तु वे भारतीय कूटनीति की पराजय ही सिद्ध हुई। भारत की चीन सम्बन्धी नीति जिन धारणाओं पर आधारित थी वे धारणायें ही भ्रांतिपूर्ण सिद्ध हुई। भारत और चीन के प्राचीन सम्बन्धों की घनिष्ठता को अत्यधिक बढ़ा-चढा देखा गया था। साम्राज्यवाद के विरूद्ध उसके संघर्ष के प्रति सहानुभूति के प्रवाह में बहकर यह सुना दिया गया था कि चीनी लोग प्राचीन काल से ही चीन को विश्व सभ्यता का केन्द्र मानते आये हैं और एक विस्तारवादी नीति में विश्वास करते रहे है। भारत पर उनके भूतकाल में आक्रमण ने करने का कारण उनकी शान्तिप्रियता नहीं वरन् हिमालय की दुर्गम पर्वत मालाएंे थी। परन्तु 20वी शताब्दी में एक ओर तो विज्ञान की प्रगति हुई और दूसरी ओर तिब्बत को चीन को सौंप देने की गलती कर भारत ने चीन के हमले को सरल बना दिया। इसके अतिरिक्त, भारतीय विदेशनीति के निर्माता यह भूल गये थे कि द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् एशिया और अफ्रीका के जागरण से उत्पन्न हुई परिस्थितियों में भारत और चीन के मध्य एशिया और अफ्रीका विशेषतः दक्षिण पूर्वी एशिया के नेतृत्व के लिये संघर्ष होना अनिवार्य हीं बन गया था।

तिब्बत की घटनाओं ने भारतीय जनता को स्तब्ध कर दिया था, चीन के द्वारा की गई (1962 का युद्ध) यह गतिविधि भारत के लिए अविष्वसनीय घटना के रूप में सामने आयी। ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे तिब्बत की घटनाओं के जवाब में चीन ने भारत की सीमाओं पर अतिक्रमण आरम्भ कर दिया हों। भारत की सीमाओं को पार कर चीनी सेनाओं के भारतीय क्षेत्रों में प्रवेश कर औचित्य सिद्ध करने के लिये चीन की ओर से यह कहा गया कि चीन के सीमा-सुरक्षा बलांे की चैतावनी के बावजूद भारत की सुरक्षा सेनाओं ने चीन प्रदेश में अवैध घुसपैठ आरम्भ कर दी थी। इसका अभिप्राय यह हुआ कि चीन भारत के हजारों मील के क्षेत्रों पर दावा प्रस्तुत करके उन्हें चीनी प्रदेश घोषित करने की चेष्टा कर रहा था। भारत की सीमाओं के अन्दर जो भारतीय सुरक्षा बल थे उन्हें चीन में घुसपैठिये कह कर चीन स्वयं भारत की सीमा के उल्लघंन को उचित ठहराने का प्रयत्न कर रहा था।

भारत और चीन के बीच लगभग दो हजार मील लम्बी सीमा है। इस सीमा रेखा को समझौतों तथा प्रशासकीय व्यवस्थाओं से नियमित किया गया था। इसके अतिरिक्त भारत-चीन प्राकृतिक सीमा रेखा भी इतनी स्पष्ट है कि दोनों देशों की वास्तविक सीमाओं के विषय में किसी को शंका हो ही नहीं सकती है। समस्त भारत-चीन सीमा को सामान्य रूप से तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। वे हैं- भूटान के पूर्व की सीमा, उत्तर प्रदेश, पंजाब तथा हिमाचल प्रदेश से लगती मध्य सीमा और चीन के तिब्बत एवं सिक्कियांग प्रदेशों से जम्मू-कश्मीर को पृथक् करने वाली पश्चिमी सीमा।

प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ की 2005 की भारत यात्रा के दैरान भारत-चीन ने शांति एवं समृद्वि के लिये एक

सामरिक एवं सहयोगात्मक साझेदारी स्थापित की। नवम्बर 2006 में चीन के राष्ट्रपति हू जिताओं की भारत यात्रा के दौरान दोनों पक्षों ने एक संयुक्त घोषणा पत्र जारी किया जिसमें सहयोग को बढ़ावा देने के लिए 10 सूत्रीय रणनीति का उल्लेख है। भारतीय प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह द्वारा , जनवरी 2008 में चीन की यात्रा के दौरान "21वीं शताब्दी के लिए एक साझा विजन" शीर्षक से संयुक्त दस्तावेज जारी किया गया। 2010 में चीन के प्रधानमंत्री जब भारत यात्रा पर आये तब 100 बिलियन अमरीकी डालर के द्विपक्षीय व्यापार का लक्ष्य निर्धारित किया गया। 2011 को 'चीन विनिमय वर्ष-2011' के रूप में चीन ने वर्ष 2011 के अन्दर चीन आने के लिए भारत के 508 युवाओं को आमंत्रित किया। मार्च 2012 में ब्रिक्स शिखर बैठक के लिए हूजिंनताओं की भारत यात्रा के दौरान दोनों देशों के नेताओं ने 2012 में "मैत्री एवं सहयोगी वर्ष" के रूप में मनाने का निर्णय लिया। चीन जनवादी गणराज्य की राज्य परिषद् के प्रधानमंत्री ली किक्यांग ने 19 से 21मई, 2013 के दौरान भारत (दिल्ली-मुंबई) का राजकीय दौरा किया। इस यात्रा के दौरान दोनों देशों ने आठ समझौतों पर हस्ताक्षर किए तथा एक संयुक्त वक्तव्य जारी किया गया उनमें से कुछ इस प्रकार है (वर्ष 2014 को) भारत और चीन के बीच मैत्रीपूर्ण विनिमय वर्ष के रूप में घोषित करना तथा उच्च स्तरीय मीडिया मंच की पहली बैठक का आयोजन करना। 22 से 24 अक्टूबर ,2013 के दौरान, भारतीय प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने चीन का अधिकारिक दौरा किया जिसमें सीमा , सीमापारीय नदियों , भारत में विद्युत उपकरणों की मरम्मत के लिए सेवा केन्द्र स्थापित करने , सड़क परिवहन तथा नालंदा विश्ववविद्यालय से सम्बन्धित षिक्षा के आदान-प्रदान तथा शोध विषयों से सम्बन्धित करारों पर हस्ताक्षर किए गए।

भारत की विदेश नीति

21वीं शताब्दी के इन परिवर्तनों और चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए भारत और चीन ने भी खुले दिमाग से भविष्य को देखना प्रारम्भ कर दिया है। वे अस्थायी प्रकृति के पूर्ववर्ती मतभेदों को भविष्य के सहयोग के लिए स्थायी गतिरोध बनाने की स्वीकृति न देने की सोच रखते हैं। 21वीं शताब्दी में भारत और चीन दोनों पड़ोसी देशों के मध्य सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्धों में कुछ समस्याएं और मुद्दे बाधक बन रहे हैं। यहाँ उन क्षेत्रों का परीक्षण किया गया है जहाँ भारत और चीन के पारस्परिक हित टकराते हैं और जिन मुद्दों पर दोनों देशों में गम्भीर मतभेद हैं। इन मुद्दों के आधार पर भारत और चीन दोनों देशों की विदेश नीति के परिवत्र्य का विश्लेरषण किया गया है। प्रत्येक देश अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा एवं अभिवृद्धि के लिए कुछ नीतियां निर्धारित करता है। वह नीति, जिसका सम्बन्ध अन्य देषों के आचरण तथा उनके साथ सम्बन्धों से होता है , विदेश नीति कहलाती है। विदेश नीति ज्ञान और अनुभव पर आधारित एक सुनिष्चित और वृहद् योजना होती है , जिसके द्वारा किसी सरकार के शेष संसार के साथ , सम्बन्धों का संचालन किया जाता है। प्रत्येक राज्य का व्यवहार अन्य देषों के व्यवहार को प्रभावित करता है। अपने राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए, प्रत्येक देश अन्य देशों की गतिविधियों का अधिकतम लाभ उठाना चाहता है। इस प्रकार , विदेश नीति का प्रमुख उद्देश्या यह होता है कि नीति निर्धारित करने वाला देश अन्य देशों के व्यवहार में , अपने हित के अनुसार , परिवर्तन कराने का प्रयास करे। अतः विदेश नीति का उद्देश्य अन्य राज्यों के व्यवहार को नियन्त्रित करना होता है न कि उनमें केवल परिवर्तन करवाना। विदेश नीति का अस्तित्व शून्यता के आधार पर नहीं हो सकता। वह केवल कुछ हितों और उद्देश्योंह के सन्दर्भ में ही कार्य कर सकती है।

छेष की सुरक्षा सुनिष्चित करना प्रत्येक सरकार का प्राथमिक उद्देश्यन होता है। सुरक्षा की अवधारणा की विषय वस्तु एक शान्तिपूर्ण परिवेष , पड़ोसियों तथा जितने अधिक से अधिक देशों के साथ सम्भव हो मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध, जहाँ शत्रुता से बचा नहीं जा सकता वहाँ उसका सामना करने वाले तत्वों और शक्तियों की उपलब्धि , आन्तरिक एकता एवम् स्थायित्व , आर्थिक विकास एवं प्रगति तथा जनता का कल्याण , प्रसन्नता एवम समृद्धि सब कुछ शामिल होता है।

भारत को निष्चित रूप से चीन से सबसे बड़ा खतरा है। चीन 'स्वीट शुगर' की तरह भारतीय सुरक्षा परिवेष को विषाक्त बनाने के लिये आर्थिक सामरिक एवं राजनयिक रणनीति के कदम निरंतर बढाता जा रहा है। भारतीय शांति एवं सुरक्षा के लिए हमारा पड़ोसी , देश चीन चारों ओर से अपना सामरिक जाल फैलाते हुए क्रूर गतिविधयाँ अपनाता जा रहा है। चीन , पाकिस्तान, नेपाल, म्यांमार, बांग्लादेष एवं श्रीलंका में ऐसा चक्रव्यूह बना रहा है कि भारत चारों ओर से घिर जाये। चीन एक ओर जहाँ पाकिस्तान की तर्ज पर बांग्लादेश में भी अपना परमाणु कार्यक्रम शुरू करने में प्रयासरत् है , वहीं दूसरी तरफ नेपाल को तिब्बत से रेल-लाईन द्वारा जोडने की योजना बना चुका है। एषिया तथा अन्य क्षेत्रों में चीन की लगातार मजबूत होती आर्थिक व सैन्य शक्ति से निपटने के लिए

भारत को अपनी एक वृहत् रणनीति बनाना बेहद जरूरी हो गया है।

चीन में द्वितीय विश्व युद्ध के समाप्त होने के बाद सन्नयात्सेन की कुमिनताग पार्टी के प्रमुख च्यांगकाईषेक का असर पूरे चीन में समाप्त हो गया था तथा उन्हें फारमोसा के द्वीप पर शरण लेनी पड़ी थी , तथा भारत ने माओवादी चीन की साम्यवादी सरकार को मान्यता प्रदान कर दी क्योंकि भारत की हजारों किलोमीटर लम्बी सरहदें चीन के साथ जुड़ी हुई हैं तथा इसका निर्धारण का विषय विवाद ग्रस्त है षिमला समझौते में इस विवाद का निपटारा करने का प्रयत्न ब्रिटेन ने किया लेकिन चीन ने इस समझौते पर हस्ताक्षर करने से इंकार कर दिया।

भारत-चीन राजनीतिक सम्बन्ध

21वीं सदी में UPA Govt. का काल प्रारम्भ हुआ तथा भारत-चीन सम्बन्धों के मध्य विवादों को सुलझाने के लिये सकारात्मक कदम उठाये गये। दोनों देशों ने अपने विवादों को सुलझाने के लिये कई बार एक-दूसरे के देश में यात्रायें की, विशेषकर भारत की ओर से सीमा-विवाद को हल करना यही प्राथमिकता रही, लेकिन चीन ने इस ओर अधिक ध्यान न देते हुये दोनों देशों के मध्य आर्थिक सम्बन्धों को बद्व-पक्षीय व्यापार को 40 अरब डॉलर तक पहुँचाया जायेगा, जो 2010 में 60 अरब डॉलर हो गया। सन् 2008 भारत-चीन सम्बन्धों की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण रहा है , प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने जनवरी 2008 में चीन की यात्रा की, दोनों प्रधानमंत्री ने 21वीं सदी के लिये साझा लक्ष्य तय करने सम्बन्धी दस्तावेज पर हस्ताक्षर किये। चीन के प्रधानमंत्री वेन जियाबाओं की भारत यात्रा दिसम्बर 2010 में व्यापार तथा आर्थिक मुद्दों पर बहुत अधिक सफलता प्राप्त हुई है। इसमें दोनों देशों ने एक संयुक्त घोषणा पत्र जारी किया - दोनों देश इस बात से सहमत थे कि वे विश्व व एशिया की शान्ति में अहम् भूमिका निभायेंगे। दोनों देशों में पंचशील के सिद्धान्तों के आधार पर द्वि-पक्षीय सम्बन्धों को दृढ करने पर सहमती दी , द्वि-पक्षीय व्यापार , जो वर्तमान में 60 बिलियन डॉलर है को 2015 तक 100 बिलियन डॉलर तक बने का लक्ष्य रखा।

भारत और चीन दोनों आर्थिक विकास के लिए आवश्यक ऊर्जा प्राप्ति के लिए अनेक चुनौतियों का सामना कर रहे है। पूर्व में, दोनों देश परम्पर एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा में रहे है। वर्ष 2003 में तत्कालीन प्रधानम ंत्री वाजपेयी की चीन यात्रा से रेशम मार्ग पर पड़ने वाला नाथुला दर्रा को व्यापारिक इस्तेमाल के लिए खोलने की पहल की गयी।

उसके बाद सन् 2004 में भारत और चीन ने सीमा व्यापार के संबंध में एक समझौते पर हस्ताक्षर किया और दोनों पक्षों द्वारा नाथूला दर्रे से व्यापार करने के प्रति सहमति बनी। इसके फलस्वरूप उसे 6 जुलाई 2006 ई0 को गर्म जोशी और उत्साह के साथ खोला गया। दोनों देशों के बीच हुए समझौते के तहत शुरूआत में यह व्यापार सीमांत क्षेत्रों तक ही सीमित रहेगा। सीमा के आस-पास के क्षेत्रों के निवासियों द्वारा उत्पादित वस्तुओं का , बिना शुल्क के व्यापार हो सकेगा। वर्ष के चार महीनों 1 जून से 30 सितम्बर तक होने वाला यह व्यापार अगले 5 वर्षो तक सिक्किम के व्यापारियों तक ही सीमित रहेगा। सीमा पार से भारत में प्रवेश करने वाले वाहनों को 50 रू का शुल्क देना होगा जबकि भारत की ओर से चीन में प्रवेश करने वाले वाहनों को पांच युआन का भुगतान करना होगा। भारत इस मार्ग से चीन को 29 वस्तुओं का निर्यात करेगा जबकि चीन से रेशम सहित 15 वस्तुएं आयात की जायेंगी। सीमा व्यापार मार्ग के खुलने से मिलने वाले अवसरो से सिक्किम के व्यापारी और सामान्य जनता अति उत्साहित है।

आर्थिक विकास के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियाँ भी कम महत्वपूर्ण नही है। इसकी भी आर्थिक वृद्धि-दर गत दशक मंे औसत रूप से अच्छी रही है इस दौरान भारत में उद्योगों का व्यापक रूप से फैलाव हुआ तथा यह विज्ञान तथा तकनीकी के क्षेत्र में विकसित देशों में भी अग्रणी स्थान रखता है। परमाणु ऊर्जा , अंतरिक्ष तथा इलेक्ट्राॅनिक्स आदि क्षेत्रों में भी भारत ने काफी अच्छी प्रगति की है। साॅफ्टवेयर के उत्पादन तथा निर्यात में भारत शीघ्र ही साॅफ्टवेयर महाशक्ति बनने वाला है। भारत की “हरित क्रान्ति ” तथा “श्वेत क्रान्ति ” की पूरे विश्व में व्यापक प्रशंसा की गयी। नई शताब्दी मंे इस बात की पूरी संभावना है कि चीन व भारत विकसित देशों से अपनी दूरियां कम करके आर्थिक क्षेत्र में विश्व शक्ति बन सकेंगे।

भारत तथा चीन दोनों के समक्ष आर्थिक एवं सामाजिक विकास का मुद्दा सबसे महत्वपूर्ण है। यह दोनों के लिए आवश्यक है तथा इसके लिए इनके बीच स्थायी एवं सौहार्द्रपूर्ण वातावरण होना आवश्यक है। चीन , भारत का सबसे बड़ा पड़ोसी देश है। तथा भारत चीन का दूसरा सबसे बड़ा पड़ोसी देश है। अतः शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व केवल सुरक्षा के दृष्टिकोण से ही महत्वपूर्ण है। शांतिपूर्ण-सहअस्तित्व यह सुनिश्चित करेगा कि दोनों देश अपने आर्थिक संसाधनों को सुरक्षा तैयारियों पर न खर्च करके अपने आर्थिक एवं सामाजिक विकास पर खर्च करेंगे। यह

www.ignited.in

सत्य है कि दोनों ही देशों की अपनी आंतरिक समस्याएं भी है। ऐसी स्थिति में दोनों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे एक दूसरे के प्रति अच्छे पड़ोसी की तरह व्यवहार करने की वर्तमान नीति को जारी रखें तथा वर्ष 1954 में घोषित पंचशील के सिद्धांतों का अनुसरण करें। यह भी वास्तविकता हैं कि आर्थिक एवं सैन्य-शक्ति में वृद्धि के परिणाम स्वरूप दोनों ही देशों के लोगों में प्रतिस्पर्धात्मक महत्वाकांक्षा भी बढेगी किन्तु जैसे-जैसे दोनों देश अपनी नीतियों को विश्वास ले लेगा।

भारत तथा चीन दोनों का ही विशाल बाजार है। और दोनों देश अपने यहाँ नये आर्थिक सुधारों को लागू कर रहे है। इस्पात, पैट्रोलियम, अंतरिक्ष सॉफ्टवेयर आदि क्षेत्रों में आर्थिक सहयोग में निरन्तर वृद्धि हो रही है। आर्थिक सुधारों को लागू करने के अनुभवों का आदान-प्रदान भी दोनों के लिए काफी लाभदायक होगा। क्योंकि ऐसी अनेक समस्याएं है जिनका सामना दोनों को ही करना है। भारत चीन म्यांमार तथा बांग्लादेश के बीच भी क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग की अपार संभावनाऐं हैं। चीन का आर्थिक जागरण पूरे एशिया में अपना प्रभाव डाल रहा है। और भारत पर भी अपना प्रभाव सुनिश्चित करेगा। देर से ही सही भारत का ध्यान अब चीन की अपरिहार्यता पर है। भारत के निजीकरण के प्रभारी मंत्री ने चीन के भय के परिप्रेक्ष्य में संसद में भारत के आर्थिक उदारीकरण को रोकने के लिए भावुक निवेदन किया है। भारत के आर्थिक हित के संरक्षण के लिए सरकार ने चीनी खिलौनों पर रोक लगा दी है। यह तर्क देते हुए कि इनमें शीशा की मात्रा अधिक है। जबकि भारतीय खिलौनों में भी शीषों की इतनी मात्रा रहती है। विश्व व्यापार संगठन में चीन को प्रवेश का अवसर मिलने पर चीन के 20 वर्षो की आर्थिक प्रगति पश्चिमी उद्यमियों की कल्पना पर छा गयी है। एशिया के दोनों पड़ोसी देशों ने आर्थिक विकास दर में महारथ हासिल कर ली है। दीर्घकालीन विकास दर पर आर्थिक विश्लेषकों के विभिन्न विचार आ रहे है। सुभाष अग्रवाल , बिजिनेस फाउन्डेशन के अध्यक्ष एक राजनीतिक जोखिम विश्लेषक और व्यवसाय रणनीति सलाहकार और इंडिया फोकस के सम्पादक का तर्क है कि ”भारत और चीन बहुत भिन्न है और भारत सामान्यतया इस तथ्य पर बहुत कम ध्यान देता है कि कैसे चीन ने अपने आर्थिक चमत्कार को प्राप्त कर लिया। चीन के आर्थिक विस्तार को एक प्रारूप के बजाय एक खतरे के रूप में भारत अब तक देखता रहा हैं जबकि यह न तो एक प्रारूप है न ही एक खतरा है और विश्व व्यापार संगठन में चीन की सदस्या उस यथार्थता को बदलने पर बहुत कुछ काम ही कर सकता है। ” अधिकांश क्षेत्रों में चीनी और भारतीय उद्योग न तो प्रतिस्पर्धात्मक हैं न ही सम्पूरक है। भारत की सामाजिक और राजनीतिक संरचना चीन से इतनी भिन्न है कि यह भी आशान्वित नही है कि भारत उस रूपान्तरण को प्राप्त कर लेगा जैसा कि चीन ने उसी काल में कुछ वैसा पा लिया।

निष्कर्ष

भारत-चीन सम्बन्धों के मध्य बहुत पुराने ऐतिहासिक , सांस्कृतिक सम्बन्ध रहे हैं , जिसपर उनकी ऐतिहासिक , भौगोलिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक सामान्यताओं का प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ता है। भारत-चीन के ऐतिहासिक सम्बन्धों को यदि देखा जाये तो यह सम्बन्ध हमेषा से ही उतार-चैते पर हस्ताक्षर हुये उस दौरान दोनों देषों के सम्बन्ध बहुत ही विष्वसनीय एवं सहयोग पर आधारित थे। 1962 का युद्ध भारत को चीन की कूटनीति विदेष नीति से अवगत करता है। वाजपेयी जी के शासन के समय भारत-चीन सम्बन्धों में अत्यन्त तेजी से व्यावसायिक व आर्थिक सहयोग को बढ़ावा मिला। भारत-चीन की विदेष नीति के मध्य समानता की बात की जाये तो दोनों ही राष्ट्रीय हित को महत्व देते हैं। दोनो पंचषील की बात करते हैं व दोनों की विदेष नीति यथार्थवादी सिद्धान्त को अपनाती है। परन्तु इन सभी दृष्टिकोणों में विभिन्नता भी है। जहाँ चीन राष्ट्रीय हित के लिए किसी भी हद तक अर्थात युद्ध तक करने की बात करता है तो वहीं भारत शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व को ध्यान में रखकर राष्ट्रीय हित की बात करते हैं। चीन पंचषील के सिद्धान्त की सिर्फ सैद्धान्तिक रूप से बात करता है। व्यवहार में लाने की नहीं। भारत पंचषील के सिद्धान्त को व्यवहार में आज तक अपनाये हुये है। चीन की विदेष नीति पूर्णतः यर्थाथवादी व विस्तार वादी रही है। परन्तु आदर्षवादी सिद्धान्त को अपनाते हुये इसे दूरदर्षी के रूप में यर्थाथवादी का रूप देते हैं। जब आदर्षवादी सिद्धान्त के आधार पर कोई समस्या का निदान न हो रहा हो तब यर्थाथवादी परिस्थितियों का सहारा लिया जा सकता है। इस आधार पर हम दोनों देषों की तुलनात्मक विदेषनीति का अध्ययन कर सकते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. मुरूगनाथन, के. (2011), “परिप्रेक्ष्य में भारत-चीन सम्बन्ध“, नई दिल्ली, थर्ड कॉन्सेप्ट अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका, पृ.स.11-14.

2. पोरवरण, भावना (2009), “एंडिया-चाईना रिलेषन्सः डायमेनषन एण्ड पर्सपेक्टिव्स “, नई दिल्ली, कन्टरी पब्लिकेषन, पृ.स. 26
3. यादव, आर.एस. (2013), “भारत की विदेष नीति “, दिल्ली, डाॅर्लिंग किंडस्ले (इंडिया), पृ.स208.
4. कोन्डापल्लि, श्रीकांत, ईमी मिफून (म्कण्) (2012), “चाईना एण्ड ईट्स नेबर“, पैंटागन प्रेस, नई दिल्ली
5. गुप्ता, के.आर. (2009), “इंडियास इन्टरनेषनल रिलेषन्स“ नई दिल्ली , अटलांटिक पब्लिषर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृ.स. 206
6. मिश्रा, सुरेन्द्र कुमार (2010), “चारों तरफ से चुनौती बनता चीन“, नई दिल्ली, ए.बी. पब्लिकेषन, पृ.स. 27-40
7. पोखरना, भावना (2009), “इंडिया-चाईना रिलेशन्स“, नई दिल्ली, डायमेनशंस एण्ड परस्पेक्टिव, न्यू कंटरी पृ.सं. 8-9।
8. वर्मा, राकेश कुमार (2010), भारत चीन संबंधः सहयोग और प्रतिद्वन्दिता में सीमा विवाद का यथार्थ रक्षा अनुसंधान, प्रवेशाक, 26 जनवरी, पे. न. 84
9. पंत, हर्षवर्धन (2012), ’’भारतीय सुरक्षा एवं विदेश नीति’’, नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, पेज-127
10. अह्या, सी। और गुप्ता , टी। (2010)। भारत और चीनरू एशिया के नए बाघ , भाग प्प्प् , मॉर्गन स्टेनली अनुसंधान विशेष आर्थिक विश्लेषण। मॉर्गन स्टेनली रिसर्च प्र ेस, जापान में प्रकाशित।

Corresponding Author

Pinku Kumar*

Research Scholar, Dept. of History, M.U., Bodh Gaya